मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

BHDC–103

बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी

(बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

बी.एच.डी.सी.-103 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***पहला*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) माधब, तोहें जनु जाह बिदेस।

हमरो रंग रभस लए जएबह

लएबअ कओन सँदेस॥

बनहि गमन करु होइति दोसरि मति।

बिसरि जाएब पति मोरा।

हीरा मनि मानिक एको नहि माँगब

फेरि माँगब पहु तोरा॥

जखन गमन करु नयन नीर भरु

देखहु न भेल पहुओरा।

एकहि नगर बसि पहु भेल परबस

कइसे पुरत मन मोरा॥

(ख) पानि भरइ आवहिं पनिहारीं।

रूप सुरूप पदुमिनी नारीं॥

पदुम गंध तेन्ह अंग बसाहीं।

भँवर लागि तेन्ह संग फिराहीं॥

लंक सिंघिनी सारँग नैनी।

हंसगामिनी कोकिल बैनी॥

आँवहिं झुंड सो पाँतिहि पाँती।

गवन सोहाइ सो भाँतिहि भाँती॥

केस मेघावरि सिर ता पाई।

चमकहिं दसन बीजु की नाई॥

(ग) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय

टूटे से फिर ना जुड़े, मिले गाँठ परि जाय॥

(घ) मीत सुजान अनीत करौ जिन, हाहा न हूजियै मोहि अमोही।

डीठि कौ और कहूँ नहि ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।

एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान-बटोही।

हौ घनआनंद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही॥

(ङ) कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते।

लंबे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते॥

बांधे कोई रूमाल है रोटी के वास्ते॥

सब कष्फ़ और कमाल हैं रोटी के वास्ते॥

जितने हैं रूप सब यह दिखाती हैं रोटियाँ॥

2. अमीर खुसरो के काव्य में वर्णित लोकजीवन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 16

3. मीराबाई के काव्य में उपस्थित स्त्री चेतना को विवेचित कीजिए। 16

4. कबीर के काव्यसौंदर्य पर प्रकाश डालिए। 16

5. सूरदास के वात्सल्य वर्णन का विवेचन कीजिए। 16

6. जायसी के काव्य में वर्णित लोकजीवन के विविध पक्षों का उल्लेख कीजिए। 16

7. रीति, नीति व प्रीति के कवि के रूप में बिहारी की समीक्षा कीजिए। 16

8. "विद्यापति के काव्य में भक्ति, शृंगार व लोकजीवन की त्रिवेणी प्रवाहित होती है"। इस कथन पर विचार कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ कीजिए :

$2 \times 8 = 16$

(क) अमीर खुसरो की भाषा

(ख) सूरदास के काव्य में लोकजीवन

(ग) रहीम के काव्य में लोकतत्व

(घ) रसखान का प्रेमदर्शन।

× × × × ×